IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

# शहडोल जिले के बैगा आदिवासी समाज में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का एक अध्ययन

**डॉ. राजेन्द्र कुमार तिवारी**
प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय महाविद्यालय, गुढ़ जिला, रीवा (म.प्र.)

**नीलम मिश्रा**
शोधार्थी, अर्थषास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

**शोध सारांश –**

हमारी पवित्र पावन भूमि में विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं। भारत के पर्वतीय एवं वन्यक्षेत्र में अनेकों ऐसे मानव समूह निवास करते हैं, जो कि मानव सभ्यता की विकास की दृष्टि से प्रारंभिक सोपानों से आगे नहीं बढ़ पाये हैं एवं जो हजारों वर्षों से शेष विश्व की सभ्यता से दूर अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की पहचान बनाये हुये हैं। इन्हें आदिवासी, कबीली, आदिमवासी, जनजाति, वन्यजाति आदि विभिन्न उपनामों से संबोधित किया जाता है।

**मुख्य शब्द –** बैगा, आदिवासी, समाज, सामाजिक, परिवर्तन, संस्कृतियों, आदि।